विदेशनीति को निर्धारित करने वाले कारक और उनकी भूमिका

डॉ. सुनीता त्रिपाठी
एसोसिएट प्रोफेसर - राजनीति विज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

देश की विदेशनीति का लक्ष्य राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति और उनकी पूर्ति एवं उनकी रक्षा करना है। देश का आंतरिक विकास, आर्थिक विकास, राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा, सैनिक दृष्टि से. शक्तिशाली बनना, राष्ट्रक्ति में वृद्धि, अंतर्राष्ट्रीय सम्मान की प्राप्ति विश्व शांति एवं सुरक्षा और सुरक्षा की स्थापना के साथ-साथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक उद्देश्यों की प्राप्ति विदेशनीति के प्रमुख आधार हैं। प्रायः देश संधि वार्ताओं, द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय समझौतों, क्षेत्रेय सुरक्षा संधियों, आर्थिक सहयोग संगठनों, कूटनीतिक संबंधों की स्थापना, विश्व संगठनों का उपयोग और कभी-कभी आवश्यकता पड़ने पर कूटनीतिक संबंधों को विदेानीति के लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं।

1. भौगोलिक स्थिति -

राष्ट्र की विदेश नीति का यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह निर्धारक प्रकृति से स्थाई हैं। हम सभी जानते हैं कि एक राष्ट्र की भौगोलिक स्थिति परिवर्तित नहीं की जा सकती है। भौगोलिक स्थिति से लाभ व हानि दोनों ही प्राप्त होते हैं। भौगोलिक परिस्थितियों का विदेशनीति के निर्धारण में महत्व को स्पष्ट करते हुए जवाहर लाल नेहरू ने 10 मार्च 1950 को लोकसभा में कहा था- "हम एशिया के सामारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भाग हिन्द महासागर के मध्य में स्थित है, अतीत एवं वर्तमान काल से हमारा संबंध पश्चिमी एशिया, का बड़ा भाग अतीत के उपनिवेशवाद से युक्त है। हमारे मस्तिष्क स्वाभाविक रूप से चमी, पूर्वी तथा दक्षिण पूर्वी के देशो से हमारे पुराने संबंधों के पुराने दिनों की ओर लौट आते हैं।"

2. जनसंख्या -

जनसंख्या का कम या ज्यादा होना अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। जनसंख्या एक ऐसा भू-राजनैतिक तत्व है जिसके आधार पर राष्ट्र की शक्ति का अनुमापन करने में सहयोग मिलता है। एक अनुमान के अनुसार विश्व की 40 प्रतिशत जनसंख्या चीन व भारत में निवास करती है। यह तत्व भारत व चीन को विशाल सेनायें रेखने के अवसर प्रदान करता है। समय व असवर पर संख्या को गुणात्मक बनाकर विश्व की महान शक्ति संभावनायें रखते हैं, लेकिन कम जनसंख्या परन्तु गुणात्मक शक्ति के आधार पर भी राष्ट्र बड़ी शक्ति वन सकते हैं। इसका उदाहरण एशिया में जापान से दिया जा सकता है, विश्व की महाशक्ति अमेरिका के पीछे उसकी गुणात्मकशक्ति ही है। इस आधार के मद्देनजर हम कह सकते हैं कि भारत की जनसंख्या ने उसकी विदेशनीति के निर्धारण में सदैव ही एक महत्वपूर्ण निभाई है और अंतर्राष्ट्रीय जगत में उसकी स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान की है।

3. आर्थिक कारक -

विदेश नीति के निर्धारण में आर्थिक स्थिति की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। विदेशनीति का तात्पर्य राष्ट्रीय शक्ति का प्रमुख तत्व। पं. नेहरू ने 4 सितम्बर 1947 को संविधान सभा में कहा था- "अंतिम रूप से विदेशनीति आर्थिक नीति का परिणाम है और अब तक भारत की आर्थिक नीति सुनिर्मित नहीं होती, तब तक उसकी विदेश नीति अपेक्षाकृत अस्पष्ट, अपूर्ण व दिशाहीन होगी।"

स्वतंत्र होते समय भारत अन्य एशियाई देशों की तरह पिछड़ा हुआ देश था, विभाजन के परिणाम स्वरूप शरणार्थी समस्या, परम्परागत सामंती, कृषि व्यवस्था, औद्योगिक क्षेत्र का पिछड़ापन, बड़ती हुई जनसंख्या, बेरोजगारी जैसी मूलतः औपनिवेशिक वसीयत नये सिरे से पांवो पर खड़े होने की मांग कर रही थी। विश्रृंखलित अर्थव्यवस्था को पुनः खड़ा करना था। औद्यौगिक क्षेत्रों में आधुनिक टेक्नोलॉजी को आधार प्रदान करना अनिवार्य था। विकास की अनिवार्यता के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रशन भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। अंतराष्ट्रीय शंति, सुरक्षा, साम्राज्यवाद, उपनिवेश के विरूद्ध संघर्ष एक बात थी। किन्तु सुरक्षा की वस्तुस्थिति को नजर अंदाज किया जा सकता था। पाकिस्तान के विरोधी आक्रमण तथा साम्यवादी चीन के अभ्युदय से सुरक्षा संबंधी प्रश्न को और भी महत्वपूर्ण बना दिया। अतः सुरक्षा के लिए समुचित वयवस्था देश के आर्थिक स्त्रोंतों पर नई मार थी। ऐसी व्यवस्था में एक ऐसी नीति की आवश्कता थी जो संसार के सभी दूसरे देशों से भरपूर सहायता प्राप्त कर सके और दूसरे आर्थिक और सैनिक सहायता की प्राप्ति राश्ट्रीय सम्मान की कीमत पर न हो। सामान्यतः सहायता देने वाला देश उस देश की आन्तिक अर्थनीति और राजनीति का न केवल प्रभावित करना पाकिस्तान, चेकोस्लोवाकिया आदि कितने देश विगत युद्ध के बाद बाहरी हस्तक्षेप का शिकार रहे है। यद्यपिभारत के नेताओं ने बाहरी सहायता अथवा ऋण लेते समय स्वतंत्र निर्णय के अधिकार को मद्देनजर रखते हुए बड़े फूक-फूक कर कदम उठाये। इसके उपरान्त भी यदाकदा बाहरी दबाव की चपेट से बचना बड़ा कठिन काम रहा है।

4. सैनिक तत्व :-

देश की विदेानीति का मुख्य लक्ष्य अपने देश की बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा करना होता है। इसके लिए देश की सैनिक क्षमता सुदृढ़ होनी चाहिए। देश की सैनिक ाक्ति के विकास के लिए उसकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत होनी चाहिए। आर्थिक विकास ही सैनिक शक्ति के विकास को सक्षम करता है। उकसे लिए हमें अपने पड़ोसी राष्ट्रों से अपने अच्छे संबंध बनाने होगें तभी पड़ोसी राष्ट्रों सेहमारी सीमा सुरक्षित रह सकती है। अतः पड़ोसी देशों से अच्छे संबंध बनाए रखने की नीति के तहत और औचित्य के आधार पर सैन्य शक्ति का विकास भारत की विदेशनीति का प्रमुख कारक है। 1962 भारत चीन युद्ध, 1965 भारत पाक युद्ध एवं 1971 के बांग्लादेश के लिए लडे गए युद्ध ने हमें अपने देश की सुरक्षा के लिए अधिक जागरूक बना दिया। परिणाम स्वरूप भारत को विदेानीति का निर्धारण इस प्रकार ध्यान में रखकर करना पड़ा है कि उसे पूर्वी एवं पश्चिमी गुटों के अधिक वित्तीय सहायता प्राप्त हो सके। भारतीय विदेानीति का स्वरूप सैनिक आवश्यकताओं के रूप में सामने आया। युद्ध सामग्री की पूर्ति, नवीनतम अस्त्र निर्माण की, प्रतिरक्षा के संबंध बनाए रखना आवश्यक था। भारत की विदेश नीति में शक्तिशाली बनाने की इच्छा व आकांक्षा का तथ्य देखा जा सकता है।

5. ऐतिहासिक अनुभव एवं परम्पराएँ :-

आधारभूत रूप से विदेशनीति उस देश की परम्पराओं, प्रवृत्तियों, वास्तविक एवं विदेश रूप से उस देश के तात्कालिक अतीत से आविर्भूत होती है। भारत की विदेशनीति भारतीय समाज की परम्पराओं एवं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की मान्याताओं का प्रतिफल है। यानी भारतीय विदेशनीति के मूल में भारतीय सभ्ययता ब्रिटिश राजनीति की परम्परा भारतीय स्वाधीनता आंदोलन तथा गॉधीवादी प्रदान के प्रीश को गहराई से महसूस किया जा सकता है। 9 दिसम्बर 1958 को लोकसभा में भारतीय विदेशनीति की चर्चा करते हुए पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि ''हमारी विदेानीति भारत की प्राचीन परिस्थितियों को अर्न्तभूत किए हुए है।''

भारत की विदेशनीति पर भारतीय दर्शन की नीति विषयक मान्यताओं एवं सामाजिक तत्वों बुद्ध धर्म, जैन धर्म, इस्लाम, क्रिचियनिटी तथा पश्चिम की औद्योगिक सभ्यता का प्रभाव नजर आता है। हिन्दू एवं जैनइज्म में बतलाया गया कि विश्व की सभी मान्यताओं को सहभाव से रहने का अधिकार है। पं. नेहरू ''डिस्कवरी ऑफ इण्डिया'' में भारतीय राजनैतिक मान्यताओं एवं परम्पराओं को स्पष्ट करते हुए लिखा है - '' भारतीय परम्पराओं में राजनैतिक एवं शक्ति का एक आद्र्यात्मक स्वरूप उजागर होता है, जो ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' पर आधारित है। सारा विश्व समाज हमारा भाई है।

6. विचार एवं विचारधारायें :-

विदेशनीति का निर्माण करते समय विचारधारा का पहलू एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक बन जाता है। एक राष्ट्र का मानव समाज किसी न किसी प्रकार की राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था पर चलता है, जिससे उसमें निवास करने वाले लोग प्रभावित होते है। विचारधारा का विकास द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद तेजी से हुआ। पूँजीवादी विचारधारा, साम्यवादी विचारधारा, या प्रजातांत्रिक विचारधारा, अधिनायकवादी विचारधारा इत्यादि अनेक विचारधारायें राष्ट्रों के मध्य प्रचलन में रही है।

भारत एक विचार प्रधान देश है। भारत परम्परागत दर्शन, सहिष्णुता, उदारता, महानता और समन्वयवाद पर आधारित है। भारत की विदेश नीति पर इन तत्वों का प्रभाव स्थापित है। शिमला समझौता इसका उदाहरण है। जिसमें भारत ने उदारतापूर्वक वह सभी भूमि पाकिस्तान को वापिस कर दी, जो उसने युद्ध में सैनिकों का खुन बहाकर जीती थी।

भारतीय विदेश नीति पर गॉधीवादी दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है इसलिये भारतीय विदेशनीति मे शांति, अहिंसा, मानवीय भाईचारा, अंतर्राष्ट्रीयवाद तथा दूसरों के मामलों में अहस्तक्षेप पर बल दिया जाता है। भारतीय विदेशनीति पर महात्मा गांधी के अहिंसा और शांति के प्रभावों को स्पष्ट करते हुए श्री जी.एफ. हडसन ने लिखा है '' गांधी के शांतिवाद ने देश को यह विश्वास दिलाया कि विश्व में शांति समझौतों द्वारा ही स्थापित हो सकती है, न कि सैनिक संगठन बनाने से। भारत ने इसे अपना कर्तव्य माना कि वह दो विरोधी गुटों से अलग रहे और इनमें माध्यम का कार्य करे।

7. राष्ट्रीय हित :-

विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करना होता है। प्रश्न उठता हैं कि राष्ट्रीय हित क्या है? प्रत्येक राष्ट्र के अपने-अपने राष्ट्र हित होते है। देश की परिस्थितियों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम, राष्ट्रीय हितों को प्रभावित और परिभाषित करती है। सामान्यतः देश की सुरक्षा, देश की सीमा एवं

ISSN 2395-05

प्रादेशिक अखण्डता, राजनैतिक स्वतंत्रता, देश की अर्थिक विकास, राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और सम्मान ये देश
राष्ट्रीय हित हैं। 4 दिसम्बर 1947 को संबिधान सभा में बोलते हुए पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि- "
चाहे कोई भी नीति निर्धारित करें, अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना, शांति, सहअस्तित्व के सिद्धांतों की बात करें
परम्पराओं और आस्थाओं पर पूरी निष्ठा रखें पर वास्तविकता यह है कि कोई भी सरकार ऐसे आचरण
खतरा नहीं उठा सकती जो राष्ट्रीय हितों को प्रतिकूल हो। अतः कोई भी राष्ट्र चाहे वह साम्राज्यवादी हो, अथ
साम्यवादी हो विदेश नीति के निर्धारण में निरंतर राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दी जायेगी।"

8. सामाजिक ढाँचा :-

समाज का स्वरूप ढाँचाः जिसके लिए विदेश नीति बनती है, भी महत्वपूर्ण है। गुटो का स्वरूप उस
विरोध अथवा मैत्री की अवस्था, जिनसे उसका आपसी संबंध निश्चित होता है, सामाजिक ढाँचे द्वारा
निर्धारित होते है। जिस समाज के गहेरे आंतरिक विरोध होगें तथा फूट होगी उसकी विदेश नीति कमजो
होगी। जिस समाज में संगठित, प्रबुद्ध तथा अनुशासित जनसंख्या के गुटों में काफी संबंध होगा वह विदेश नी
के लिए शक्ति का स्त्रोत बनता है। आधुनिक समय में नीति निर्माण प्रक्रिया के लोकतन्त्रीकरण ने विदेश नी
के सामजिक ढाँचे को महत्व को और बड़ा दिया है। घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में विद्यमान संपर्को
विदेश नीति निर्माण तथा उसके लागू होने में इस तत्व की भूमिका को और दृढ़ कर दिया है। भारती
सामाजिक संरचना भारत के मुलिम देशो के साथ संबंधों का एक तत्व रही है।

9. मत व मनोदशाएं :-

राष्ट्रो द्वारा अपनाई जाने वाली विदेश नीति के निर्माण में विश्व जनमत का अपना प्रभाव होता है
राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय दोनों प्रकार के जनमत, विदेश नीति के अन्य महत्वपूर्ण निवेश है। प्रत्येक राष्ट्र
विदेश नीति निर्माताओं को अपने लोगों को विचारों को मानना तथा उन्हें उचित स्थान देना पड़ता है। त
उसके साथ-साथ विश्व जनमत की ओर भी ध्यान देना पड़ता है। भारत ने स्वतंत्रता के पश्चात् से ही विश्
जनमत को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया। भारत विव जनमत की शक्ति को पहचानता है इसीलिए
इसकी अवहेलना करने का कतई प्रयास नहीं कर सकता है। एक देश की अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थिति क्या होग
यह विश्व जनमत के द्वारा ही निर्धारित होता है।

10. राजनैतिक तत्व :-

भारत की विदेश नीति के निर्धारण में राजनैतिक संस्थाओं एवं भारतीय संसद का महत्वपूर्ण योगदा
रहा है। भारतीय राजनैतिक में अनेक दल होते हुए भी एक ही दल (कांग्रेस) का प्रभुत्व देखने को मिलता है।
अगस्त 1947 से वर्तमान समय तक अधिकतर वर्षों वर्षो में कांग्रेस का शासन ही रहा है। विदेश नीति जैसे
महत्वपूर्ण विषयों पर सभी दलों की सर्वसम्मती से निर्णय लेने का प्रावधान भारतीय संसदात्मक व्यवस्था
देखने को मिलता है। वर्तमान युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है, इसलिए भारतीय विदेा नीति के निर्धार
में समाचार-पत्रों पत्र-पत्रिकाओं विभिन्न इन्टरनेट साइडों ने इसमे प्रमुख भूमिका अदा की है।

11. नेताओं का व्यक्तित्व :-

डन राजनीतिज्ञों और सरकारी अधिकारियों, जो विदेश नीति का निर्माण करते है, के व्यक्तित्व का भी
विदेश नीति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे नेताओं के व्यक्तिगत विचारों तथा आकांक्षाओं से विदेश नीति

अवश्य ही प्रभावित होती रही है। उदाहरणार्थ- राष्ट्रपति रीगन के अमेरिका को नंबर एक शक्ति बनाने के विचार कारण शस्त्र दौड़ को बढ़ावा मिला। 1964 तक भारत की विदेश नीति को पंचशील तथा एशिया और अफ्रीका के देशों के साथ अपनी एकता को बनाए रखने क प्रयत्न पं. नंहरू की ही देन है। मि. जुल्फिकार अली भुट्टों के विचारों के परिणाम स्वरूप पाकिस्तान में "इस्लामिक बम" पाकिस्तान की विदेा नीति का तत्व बना। गोर्बाच्योत के नेतृत्व तथा विचारों (प्रैस्ट्रोइका तथा ग्लैसनोस्ट) ने भूतपर्व सोवियत संघ की विदेश नीति को नई दिाा दी। अतः प्रत्येक राश्ट्र की विदेा नीति उसके नेताओं के व्यक्तित्व से प्रभावति होती है।

12. कूटनीति :-

कूटनीति एक ऐसा साधन है, जिससे किसी राष्ट्र की विदेश नीति अपनी सीमाओं से बाहर दूसरे राष्ट्रो के साथ अपने संबंध स्थापित करती है। कूटनीति के माध्यम से ही दूसरे राष्ट्रों के साथ संबंधों के आधार पर विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयत्न किए जाते है। एक साधन के साथ-साथ कूटनीति विदेश का एक निवेश भी है। कूटनीति द्वारा चित्रित -दृश्य तथा कूटनीतिज्ञों द्वारा तैयार की गयी रिपोर्ट, विदेश नीति निर्माण के साधन है। कूटनीति विदेश को प्रभावित करती है।

13. विश्व संगठन-

जो देश संयुक्त राष्ट्रसंघ का सदस्य बन जाता है। वह यू.एन.ओ. चार्टर और घोषणा पत्र से बध जाता है और उसके निर्णयों का पालन करता है। इस प्रकार संयुक्त राष्ट्रसंघ की सदस्यता स्वीकार करने के बाद सदस्य देशों की विदेश नीति मर्यादित हो जाती है।

14. भाषा, धर्म, जाति, संस्कृति :-

विदेश नीति के निर्धारण में इनका भी महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा और नस्ल के आधार पर सीमान्त प्रान्त के पठानों के कारण पाकिस्तान और अफगानिस्तान के मधुर संबंध नहीं रहे। रंग भेद के कारण (गोरे -काले का प्रभाव) दक्षिणी अफ्रीका की गोरी सरकार को अलग-अलग डाल दिया था। धर्म के आधार पर ही आज ही अरब इजराइल मिल नहीं पाये है। भारत का बंटवारा भी धर्म के आधार पर ही किया गया ।

सन्दर्भ

1. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति - पेज 440-441 फडिया बी.एल. 2002
2. भारतीय विदेश नीति पेज 569 यू. आर. घई 1991
3. राष्ट्रीय सुरक्षा और प्रतिक्षा पेज 101 सिंह लल्लनजी 1993
4. इण्टरशोशल रिलेशन पेज 814 महाजन वी.डी. 1986